International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-01-2026; Accepted: 06-02-2026; Published: 21-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 149-151

सेवाराम यात्री के उपन्यासों में नारी के विविध रूपों की सार्थकता

डॉ. मधुरानी
सहायक प्रोफेसर, भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–पत्र में से. रा. यात्री के उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का विश्लेषण किया गया है, विशेष रूप से 'करूणा' के चरित्र के माध्यम से। यात्री ने महानगरीय जीवन की सामाजिक विडम्बनाओं, नैतिक द्वंद्वों तथा मध्यवर्गीय स्त्री की परिस्थितिजन्य विवशताओं को संवेदनशील और यथार्थपरक दृष्टि से चित्रित किया है। करूणा का चरित्र इस तथ्य को उद्घाटित करता है कि सामाजिक, आर्थिक एवं भावनात्मक दबावों के कारण स्त्री को कभी–कभी ऐसे कार्यों में प्रवृत्त होना पड़ता है जिन्हें समाज अवांछनीय मानता है। यात्री नारी को केवल पीड़िता के रूप में नहीं, बल्कि आत्मचेतस, संघर्षशील और अपने अस्तित्व की खोज में संलग्न व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी की मानसिकता, व्यवहारिकता तथा पारिवारिक संबंधों के बीच उसकी आत्मपहचान की तलाश का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। आधुनिक नारी अपने मूल्यों के प्रति सजग रहते हुए स्वतंत्र जीवन जीने की आकांक्षा रखती है। इस प्रकार से. रा. यात्री के उपन्यास नारी के बहुआयामी स्वरूप को संतुलित, मर्यादित एवं सार्थक रूप में रेखांकित करते हैं तथा समकालीन समाज की अंतर्विरोधी संरचनाओं का उद्घाटन करते हैं।

मूल शब्दः नारी विमर्श, मध्यवर्गीय स्त्री, सामाजिक विडम्बना, स्त्री–अस्तित्व की खोज, लैंगिक असमानता, नैतिक द्वंद्व, स्त्री–स्वातंत्र्य

नारी मानव जाति की सभ्यता एवं संस्कृति का मूल आधार हैं। प्राचीन काल में नारी को पूर्णतः सम्मान दिया जाता था, किन्तु जैसे–जैसे समय बदलता गया वैसे–वैसे नारी की स्थिति में परिवर्तन होता गया। स्त्री और पुरूष एक रथ के दो पहिये के समान है जिस प्रकार तार के बिना वीणा एवं धुरी के बिना रथ महत्वहीन होता है ठीक उसी प्रकार नारी पुरूष जीवन अधूरा होता है। नारी सृष्टि की जननी है। वर्तमान समय में नारी की स्थिति में जहाँ एक तरफ सुधार हुआ है वहीं दूसरी तरफ बुरी स्थिति भी दिखाई दे रही है। डा. किरणबाला अरोड़ा के मतानुसार अब नारी अपनी पम्परा की केंचुल को उतार फेंकने को लालायित है। पिछले एक–दो दशकों से उस पर पाश्चात्य लिव–मुवमेंट का प्रभाव भी परिलक्षित हो रहा है। पुरूषों के समान ही आज नारी हर क्षेत्र में, चाहे वह नौकरी का हो, विवाह और सेक्स का, समानता के अधिकारों की माँग कर रही है। अपने इस नवीन आन्दोलन अगर वह सफल हो गई तो शायद मातृसत्तात्मक समाज के आगमन का तुमुलनाद होगा'।'
नारी समाज, परिवार व घर की स्थिति को संभालते हुए सबकी जरूरतों को पूरा करती है। नारी के इस अद्भूत क्षमता को जानते हुए भी पुरूष उसका निरादर करता है, और नारी को हमेशा उपभोग की वस्तु मानता है। इस तरह कुछ नारी समाज की संकीर्णताओं से जूझ रही है तो कुछ नारी अपनी शिक्षा और हिम्मत के बल पर पुरूष की घिनौने मानसिकता का डट कर विरोध कर रही है। इस प्रकार यात्री जी के उपन्यासों में नारी के विविध रूप परिलक्षित होते हैं जो कि इस प्रकार है।

'गृहिणी रूप में नारी'
से. रा. यात्री के अन्य उपन्यास जैसे दरारों के बीच कई अंधेरों के पार आदि में चित्रित गृहिणी नारी अधिकतर परम्परागत एवं मध्यवर्गीय सहरी परिवेश की दिखाई देती है। दिल्ली जैसे महानगरीय परिवेश में मध्यवर्ग के व्यक्ति को डॉ. किरणबाला अरोड़ा, श्साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में नारी पृष्ठ संख्या–97|
परिवार चलाना बड़ा कठीन हो जाता है, किन्तु एक गृहिणी नियोजन द्वारा उसको सहज बना देती है। कई अंधेरों के पार उपन्यास में धीरेन्द्र खन्ना की माँ ने पारिवारिक आर्थिक संघर्ष में जो मार्ग ढूँढ़े हैं, उसकी कुशलता का परिचय दे देते हैं। इसके पीछे की दूरदर्शिता को व्यक्त करते हुए धीरेन्द्र कहता है– "इस घर की आमदनी मेरी मामूली–सी तनख्वाह और किरायेदार से मिलने वाले थोड़े से रूपये ही तो थी। उन रूप्यों को वह बराबर डाकखाने में डालती चली जा रही थी। रानी की शादी को उसे बहुत चिंता थी और वह भी बखूबी जानती थी कि हम लोग अपने बलबूते उसका विवाह करने में कभी समर्थ नहीं हो पायेंगे। यह माँ का अपना ही कौशल था कि घर में सकको खाना, कपड़ा और जरूरत की दूसरी चीजें मिल रही थी। स्पष्ट है कि गृहिणी नारी में दूरदर्शिता, नियोजन तथा उत्तरदायित्व का एहसास भरपूर होता है। बेटी के विवाह की चिंता उसके लिए आर्थिक नियोजन पहले से ही करके रखना निश्चित ही गृहिणी नारी की अपनी विशेषता है।

'कामकाजी नारी–
सामाजिक दृष्टि से देखे तो देशा आजादी के पश्चात् होने वाले उल्लेखनीय परिवर्तनों में से एक है– नारी मुक्ति द्य आधुनिक शिक्षा एवं स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप नारी पुरुषों के बराबर कार्य करने लगी है। से रा. यात्री के उपन्यासों में कामकाजी नारी अधिकतर मध्यवर्ग से आई है। एक छत के अजनवी उपन्यास में यात्री जी ने कामकाजी स्त्री–पुरूष सम्बन्ध के समाजशास्त्रीय पक्ष को उद्घाटित तो किया ही है, साथ ही कामकाजी नारी की बदली सोच को भी उजागर किया है। मल्लिका और वर्मा के वैवाहिक जीवन में तनाव ग्रस्त स्थिति बनी रहती है। मल्लिका नारियों के साथ होते भेद–भाव की प्रवृत्ति रहती है। मल्लिका नारियों के साथ होते भेद–भाव की प्रवृत्ति पर चुटिला व्यंग्य कसती है– हम औरतों को तो कोई छूट मिलनी ही नहीं चाहिए। घर से बाहर भी रहे तो क्या हैं, हैं तो घर की दासी। फिर आदत खराब हो जाने का भी तो डर हैं मानिए दासी कर्म न किया तो पतियों को कैसे तसल्ली होगी। पैर की जूती घर की नौकरानी, 2 से. रा. यात्री कई अंधेरों के पार पृष्ठ संख्या–54 |
पति परयाणा यही सब और के अलंकार और आभूषण है"। मल्लिका दिल्ली में किसी प्रकार की खरीदारी न कर सके इस इरादे से उकसा पति कुतुबमीनार से पत्नी का पर्स लेकर गायब हो जाता है। मल्लिका को लगता है कि उसे पति द्वारा ठगा गया है क्योंकि पुरूष वर्ग की ओर से नारी हर मुहिम पर एक क्रूर व्यवस्था के कारण ठगी गई है। मल्लिका प्रभाकर से कहती है– "आप पुरूष है, चाहे मेरी बात का बुरा माने – मैं यह के बिना

रह नहीं सकती कि पुरुष स्त्री से बैर भाव रखता है और वह कोई भी ऐसा अवसर नहीं चुकना चाहता जब वह स्त्री से बदला चुका सके। स्त्री के पूरी देह और मानसिकता इतनी निरिह है कि हर कोई उसे ठगना चाहता है।"" अतः मल्लिका तो आज की आधुनिक पढ़ी–लिखी आत्मनिर्भर नारी है। उसका पति भले ही पर्स लेकर चला गया हो, वह गैर आदमी के साथ पूरी स्वतंत्रता के साथ दिल्ली दर्शन करती है। अतः कामकाली नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हुई है, किन्तु उसकी बदली मानसिकता ने कही न कहीं गृहस्ती जीवन में संघर्ष निर्माण कर दिया है।

'विधवा एवं परित्यागता नारी

भारतीय समाज में विधवा का जीवन अभिषाप्त जीवन माना जाता है। वैधव्य को दुर्भाय से जोड़कर देखा जाता रहा है। 'दूसरी बार' उपन्यास में यात्री जी ने विधवा स्त्री नैना के चरित्र को एक जबरदस्त रूप में चित्रित किया है। विधवा नारी के मन में किसी पर – पुरूष के प्रति आकर्षित होना पाप माना जाता है, किन्तु मानवी सहज प्रवृत्ति के कारण प्रेम और आकर्षण का निर्माण होना स्वाभावित है। इसी तथ्य को लेखक ने विधवा होने के बाद नैना और अनिमेष के सम्बन्ध को आन्तरिक ऊष्मा देकर सवारा हैं सामाजिक बंधनों के कारण विधवा का जीवन जड़ और स्थिर हो जाता है। नैना अपने जीवन को अपरिवर्तनशील समझती है किन्तु अनिमेष गत्यात्मकता का दर्शन बताकर उसी जड़तावादी दृष्टि को नकारता है। आधुनिक भारत के अनेक समाज सुधारकों ने विधवा के प्रति प्रगतिशील विचार से. रा. यात्री एक छत के अजनबी पृष्ठ संख्या–8।

से. रा. यात्री एक छत के अजनबी पृष्ठ संख्या–54।

रखते हुए विधवा पुनर्विवाह की बात कही है। उपन्यास में पारेख जी अपनी विधवा बेटी नैना को अनिमेष के साथ शहर में घूमने अकेले भेजते हैं हो सकता है कि इसके पीछे पारेख जी की यह भावना हो की अनिमेष नैना के साथ एकांत में रहकर कोई ऐसा प्रस्ताव कर बैठे जो नैना को स्वीकार हो जाए। तुम नैना को अपने साथ घूमा लाओं आज कल में 5 से. रा. यात्री ने नैना के विधवापन को संयत और उदारता धरातल पर चित्रित किया है। सामान्य बातों तक नैना को वैधव्य परम्परागत दृष्टि से सामने आता है, किन्तु जहाँ तक विधवा पुनर्विवाह का प्रश्न था, वह अधूरा ही है। अगर विधवा नैना और अनिमेष के बीच पनपते प्रेम का रूपांतरण विवाहसुत्र में बाँध दिया जाता तो प्रगतिशील का उदाहरण पाठकों के समक्ष रख दिया जाता तथापि लेखक की दृष्टि आज की आपाधापी और भोगवादी संस्कृति में उलझकर रह जाता है। टापू पर अकेले उपन्यास में परित्यागता नारी के प्रति संवेदना अभिव्यक्त हुई है। उपन्यास का नायक कुँवर विरेन्द्र सिंह सामन्ती संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता दिखाया गया है। सामन्ती परिवेश में व्यक्ति ऐशो–आराम से रहता है इसलिए मनमानी ढंग से जिन्दगी जीता है। विरेन्द्र ने अपनी पत्नी शीलकुँवर को चार बच्चों के बावजूद छोड़ दिया। कारण यह था कि शीलकुंवर की प्रसव के समय आयी डॉनी की ओर विरेन्द्र का झुकाव बढ़ता जा रहा था और विरेन्द्र के नजर में शीलकुंवर राज घराने की राजकुमारी जैसी अनुपम सुन्दरी नहीं थी। इस तरह अपनी ससूराल से तिरस्कृत और प्रताड़ित बहू अपनी संतान के सामने कितनी गौरव हीन हो जाती है। इसकी तो कल्पना करना भी कठिन है। शीलकुंवर का भाई उसका मनोबल बढ़ाते हुए उसे पढ़ने के लिए प्रेरित किया जिसे कुछ ही वर्षों में वह अध्यापिका बन गई। परित्यागता नारी के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए रामेश्वर कहता है– भाभी साहब आप इतनी यातना सही और अपनी बहादूरी से सारे संतापों को जिस तरह से काटकर फेंक दिया और चेहरे पर मलाल की एक लकीर तक आने नहीं दी यह अपने आप में जिंदा 5 से. रा. यात्री श्दूसरी बार पृष्ठ संख्या–119।

मिसाल है। अतः परित्यागता नारी अपने कर्तव्य दक्षता से जीवन को नई दिशा दे सकती है।

'दहेज से पीड़ित नारी भारतीय सामाजिक संरचना में प्राचीन काल से ही किसी ने किसी रूप में दहेज का रिवाज रहा है। कभी कन्या पक्ष दहेज के रूप में कुछ न कुछ उपहार लेकर कन्या का विवाह करते हैं या कभी वरा पक्ष को दहेज या उपहार देकर कन्या का विवाह किया जाता था। आज तो अधिकतर दहेज कन्या पक्ष द्वारा ही वर पक्ष को उपहार किसी न किसी रूप में दिया जाता है। से. रा. यात्री द्वारा रचित उपन्यास सुबह की तलाश में दहेज के कारण नायिका बीना की मंगनी टूटने की घटना को चित्रित किया गया है। लड़की – लड़का दोनों पढ़े–लिखे हैं, किन्तु लड़के में माता – पिता चाहते हैं कि बीना के साथ दहेज में कुछ लिया जाए। राकेश अपने मित्र सतीश से कहता है– ये लोग फालतू ही तुझे और बीना को फँसा रहे हैं। इसका असली कारण तो यह है कि जीजाजी ने विवाह कराया है। इसलिए मुँह खोलकर दहेल मांग नहीं सकते। यही एक बात होता है लड़के के बाप का। सच पूछो तो यह इन्कार लड़के का नहीं उसके माँ–बाप का है। हमारे पूर्वजों ने भले ही नारी के लिए 'यत्र नारेशु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' कहा हो, किन्तु नारी के मानवीय रूप में हमेशा उपेक्षा होता आई है । इस देश की औरतें सैकड़ों बेड़ियों में जकड़ी हुई है। जब तक बेजुबान बनी रहेगी यह सब होता रहेगा। उपन्यासकार परम्परागत रूढ़ियों का विरोध करते हुए आधुनिक सोच का बोध किया है। बीना की मंगनी दहेज के कारण टूटी थी इसलिए बीना का विवाह उस लड़के से होते दिखाया गया है जो दहेज को ठुकराकर अपनी आधुनिक सोच के बल – बूते पर आर्य समाज में विवाह सम्पन्न कराता है। अतः यात्री जी का यह उपन्यास आधुनिक सोच को परवान देने में अपना अहम स्थान रखता है।

'अपने सामर्थ को सिद्ध करती नारी –

स्वतंत्रयोत्तर परिवेश में भारतीय नारी ने अनेक चुनौतियों को स्वीकार किया

है। विशेषतः महानगरीय परिवेश में पढ़ी–लिखी नारी अपने सामर्थ्य को सिद्ध करने के लिए संघर्षरत होती है। उपभोगवादी प्रवृत्ति के कारण स्त्री–पुरूष सम्बन्ध नैतिक वस्तु के साधन मात्र बनकर रह गए हैं। यात्री कृत आखरी पड़ाव उपन्यास में अविनाश और सुमी के विवाह पूर्ण सम्बन्धों की पड़ताल करते हुए बनते–बिगड़ते सम्बन्ध को चित्रित किया गया है। सुमी आधुनिक सोच की नारी होने के कारण उसने अविनाश को दो टुक में कहा– इस तरह से निष्कृष्ट जिन्दगी जीने से अच्छा तो यही है कि मैं फूटपाथ पर जाकर पड़ जाऊँ। शराफत की दीवारों के बीच मेरे साथ जो कुछ हो चुका है उससे बुरा मेरे साथ कहीं कुछ हो ने वाला नहीं है। इस संवाद में एक नारी की त्रासदी तो है किन्तु विरोधात्मक स्वर भी मुखर हुआ है। अपने सामर्थ्य को सिद्ध करने हेतु सुमी अविनाश को छोड़ देती है और दिल्ली विश्व विद्यालय से पी–एच. डी. की उपाधी प्राप्त कर अमेरिका के न्यूजर्सी में हिन्दी पढ़ाने चली जाती है। इससे हार्दिक प्रशन्नता होती है कि नारी ने अपने सामर्थ्य को स्वयं स्थापित कर लिया है। अब वे किसी की भी सुखापेशी नहीं है। अतः अविनाश की अपमानजनक चुनौती को सुमी न केवल स्वीकार किया था बल्कि उसे उचित उत्तर देकर भी दिखा दिया था। इस प्रकार हम यह देखते है कि सुमी जैसी कामकाजी नारी अपनी अस्मिता के प्रति अत्यंत सजग है।

'फिल्मों में काम करने वाली नारी'

यात्री जी के उपन्यासों में फिल्मी दुनिया की खोखली तस्वीर सामने रखी गई है। बाहर की दुनिया में बेहम कामयाबी पाने वाले लोगों की भीतड़ी जिंदगी कभी – कभी नरक से भी बदतर होती है। पिंजरा उपन्यास की नायिका नीना के इसी मानसिकता

का सूक्ष्म चित्रण कर उसकी मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व को प्रस्तुत किया गया है। नीना को सभी प्रकार का भौतिक सुख नागपाल ने दिया किनतु फिर भी उसके अन्तर में असंतोष की ज्वाला भड़कती रहती है। पत्रकार मि. मलिक से वह कहती हैं ये लोग दिन के वक्त एक दूसरी ही तरह की जिन्दगी गुजारते हैं जिसमें कभी – कभी इनके सन्यासी होने की गलतफहमी होने लगती है, लेकिन जब आधी रात इनकी चंडाल चौकरी जमती है तो आप दिन वाले आदमी के साथ रात वाले उसी आदमी को किसी भी तरह एक नहीं कह सकते। नीना के इस कथन से फिल्मी दुनिया की अंतरंग वास्तविकता प्रकट हो जाती हैं नागपाल और मिना के दाम्पत्य सम्बन्ध में व्यार कम और कामुकता अधिक थी। नागपाल अत्यंत व्यस्त आदमी है, उसके पास अपनी पत्नी के लिए समय नहीं है। समय है भी तो मात्र सम्भोग के लिए। ऐसी स्थिति में वह शराब का ही सहारा लेती है। मिना पत्रकार मि. मलिक से साक्षात्कार करते समय नागपाल के दोहरे व्यक्तित्व को खोल देती हैं– "मैं सिर्फ यह पूछना चाहती हूँ कि क्या आप अब भी हमारा सुखी गृहस्थी के बारे में अपने मशहूर पेपर में कुछ लिखेंगे? इस प्रकार फिल्मों में काम करती नारी की अंतरंग त्रासदी को फिल्मी जगत की खोखली वास्तविकता को, मिना की अकेलेपन की मानसिकता को यात्री जी ने उद्घघटित किया है।

'प्रेरणा शक्ती के रूप में नारी

नारी की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए राष्ट्र पति महात्मा गाँधी जी ने कहा है– "स्त्री को अबला कहना उसका अपमान है। यदि शक्ति का अभिप्राय पाशविक शक्ति से है, तो स्त्री सचमुच पुरूष के अपेक्षा कम शक्तिशाली है। यदि शक्ति का अभिप्राय नैतिक शक्ति से है तो स्त्री पुरूष से अधिक शक्तिमान है"।' तात्पर्य यह है कि नारी शक्ति के रूप में जानी जाती है, जिसने हमेशा पुरूष को प्रेरित करने का प्रयत्न किया है। उपन्यास सुबह की तलाश में बिना का चरित्र प्रेरणा शक्ति के रूप उजागर हुआ है। बिना कहीं न कहीं नायक सतीश के लिए, जो सुबह की तलाश में भटक रहा है उसे स्थायित्व देने का नैतिक बल प्रदान करती है। बेरोज़गारी के कारण निराश हुए सतीश को बिना दिलासा देती है। जब अचानक एक दिन सतीश को देहरादून की एक मिशनरी संस्था के मूक और बधिर बच्चों के स्कूल में सेवा प्रदान करने का पत्र मिलता है, तब बीना कहती हैं– "ऐसा ही तो होता है। एक रास्ता बन्द होता है तो कई रास्ते खुल जाते है। बस आदमी को
6 से. रा. यात्री पिंजरा पृष्ठ संख्या–74। 7
वही पृष्ठ संख्या–89।
निराश नहीं होना चाहिए। इस कथन में नारी की प्रेरणा तो है साथ ही आशावादी दृष्टिकोण भी है। यह आशावादिता ही प्रेरक शक्ति बन जाती है।

'कॉलगर्ल्स के रूप में नारी

कॉलगर्ल्स का अर्थ है – जरूरत पर जिस युवती को निर्धारित शुल्क देकर सीधे या एजेन्ट के माध्यम से किसी निश्चित अवधि के लिए बुलाया जा सके। यह एक प्रकार का व्यवसाय है। इसमें संभ्रांत वर्ग की युवतियाँ अधिक शामिल है। दराजों में बन्द दस्तावेज उपन्यास में यात्री जी ने कॉलगर्ल्स की सामाजिक विकृति को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास का प्रधान नारी चरित्र करूणा के माध्यम से कॉलगर्ल्स टाइप लड़कियों की मजबूरी को सामने रखा है। करूणा का पालन–पोषण एक वृद्ध नारी मौसी ने किया था। करूणा को मौसी मसूरी ले आती है और सैलानियों के दिन बहलाने का व्यवहार उससे करवाती है। उसके सुन्दर देह का उपयोग मौसी अपने जीवन को चलाने के लिए करती है। अतः यह एक समाज की बड़ी विकृति है कि जिसे बेटी के रूप में माना जाता है उसी के देह को पूँजी मानकर रूपया कमाया जाता है। से.रा. यात्री ने उपन्यास में बहुत ही हल्के–हल्के संकेत देकर करूणा के कॉलगर्ल्स होने की ओर इशारा किया है। सवाल ये है कि मसूरी में जहाँ अधिकतर सैलानियों का आना–जाना होता है वहाँ बीमार करूणा को लेकर क्यों आई थी? मसूरी के कैमेल्स बैंक रोड पर देशी–विदेशी अमीर सैलानी सैर करने आते–जाते हैं, मौसी उसी सड़क पर करुणा को लेकर घूमने आती हैं? परेस के अंतरंग सम्बन्ध स्थापित करने के लिए क्या करते हो, बड़ी अच्छी तनख्वाह पाते होंगे, आदि सवालों के पीछे सहज भाव था या करूण की नजदीकी बढ़ाकर पैसे हड़पना चाहती है यह भी सोचनीय है। वैसे भी मौसी परेस से धीरे–धीरे करके हजार रूपये ले चूकी थी मौसी रोज करूणा से कहती थी कि वह परेस के साथ सैर पर चली जाए किन्तु जिस दिन अप–टू–डेट वेश–भूषा से सुसज्जित समवयस्क युवक आने वाला होता है, उस दिन करूणा कौ मौसी ने यह क्यों नहीं कहा कि परेस के साथ घूमने चली जाओं? अंधेरा होने तक से. रा. यात्री सुबह की तलाश पृष्ठ संख्या–62 |
करूणा उदास हो जाती है। उसका मन एकाग्रता में कुछ सोचने की ओर लगा रहता है। आखिर ऐसा क्यों होता था शायद रात होते ही किसी जरूरतमंद की जरूरत पूरी करने के अनिक्षा के कारण वह उदास हो जाती थी। करूणा वह युवती है जो मौसी के ऐहसानों तले दबकर वह काम करती रही जो समाज में अवांछनीय माना जाता है। अंत में मसूरी छोड़ने से पूर्व परेस के नाम करूणा एक पत्र लिखती है और उस पत्र में अपने जीवन का आइना ही दिखा दी। करूणा लिखती है– ष्जहाँ तक मैं समझती हूँ, कुछ अयाचिक किस्म के आदमी आपके नजर में जरूर आए होंगे जो हमारे होटल में आते थे और जिन पर मौसी का अनन्य प्रेम भी था किन्तु आपने कभी एक शब्द उन लोगों के विषय में नहीं कहा। मौसी ने जाने किन–किन सूत्रों से जरूरतमन्दों को हमारे यहाँ भेजन की व्यवस्था की हुई थी । करुणा का यह खुलासा उसके कॉलगर्ल्स होने का प्रमाण है। इस प्रकार से. रा. यात्री ने हमारी सामाजिक विकृतियों को आकर्षण मुल्लमें में दबाकर रखी स्थिति का पर्दाफास किया है। महानगरीय परिवेश में बढती कॉलगर्ल्स की विकृत संस्कृति को संवेदनशील और संप्रेषणीय बना दिया है। इस प्रकार नारी के विविध रूपों की सार्थकता से. रा. यात्री के उपन्यासों में रेखांकित हुए हैं। यात्री जी ने नारी के प्रति बड़ा ही संतुलित दृष्टिकोण रखा है। कहीं भी नारी के व्यक्तित्व को एक मर्यादा के स्तर से गिरने नहीं दिया है। मध्यवर्ग की नारी और उसकी प्रवृत्तियों तथा उसकी व्यवहारिकता एवं मानसिकता की ओर सूक्ष्म दृष्टि रही है। अधिकतर नारी पात्र परम्परागत पारिवारिक सम्बन्ध से जुड़करी अपने अस्तित्व की खोज करते हैं। वस्तुतः आज की नारी अपने जीवन को अपनी ढंग से जीना चाहती है। उसके जीवन में कुछ अपने भी मूल्य है जिन्हें किसी भी कीमत पर वह छोड़ने के लिए तैयार नहीं और इसी का परिणाम है तनाव की वह स्थितियाँ जो से. रा. यात्री के उपन्यासों में अभिव्यक्त हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. किरणबाला अरोड़ा, साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में नारी, पृष्ठ संख्या– 97, वाणी प्रकाशन, 2003।
2. से. रा. यात्री, कई अंधेरों के पार, पृष्ठ संख्या– 54, राजकमल प्रकाशन, 2007।
3. से. रा. यात्री, एक छत के अजनबी, पृष्ठ संख्या– 8, राजकमल प्रकाशन, 1996।
4. से. रा. यात्री, एक छत के अजनबी, पृष्ठ संख्या– 54, राजकमल प्रकाशन, 1996।
5. से. रा. यात्री, दूसरी बार, पृष्ठ संख्या– 119, राजकमल प्रकाशन, 2010।
6. से. रा. यात्री, पिंजरा, पृष्ठ संख्या– 741, राजकमल प्रकाशन, 2002।
7. से. रा. यात्री, पिंजरा, पृष्ठ संख्या– 89, राजकमल प्रकाशन, 2002।
8. से. रा. यात्री, सुबह की तलाश, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 62 1